बाबा भूतनाथ मंदिर में राधा कृष्ण मंदिर पर संस्कृत में शलोक लिखा है।

महाराजाधिराजस्य माण्डब्य नगरी पते: श्रीमद् योगिन्द्र सेन.....

श्रीमद् योगीन्द्र सेवायै शङ्खाख्याय सत्तमः
अपने पिताश्री गरुडमल जी की पुण्य स्मृति में
ला वल्लभदासजी ने माघ [illegible] विक्रमी में
यह मन्दिर बनवाया
कृपया मन्दिर परिसर
में साफ-सफाई का
विशेष ध्यान रखें।

माण्डव्य प्रभा

डां० विद्या चन्द ठाकुर

अनुक्रमणिका

आमुख/अ - उ
माण्डव्य ऋषि की तपोभूमि/1
ऐतिहासिक नगरी : छोटी काशी/5
त्रिवेणी महादेव/11
ममलेश्वर महादेव/15
छत्रेश्वर महादेव/18
शाला का मशट्रियोल शिवद्वाला/22
शिकारी देवी/26
महायोगी का शक्तिपीठ/29
काओ कामक्षा/32
महामाया कोट पांगणा/35
बनौणी महामाया/40
धुआं देवी/43
पाण्डवों के ठाकुर/47
मूल माहुं नाग/53
खणी का देव छमाहूं/56
हुरंग नारायण/60
पिंगला के लक्ष्मी नारायण/67
ऐतिहासिक दुर्ग : कमलाहगढ़/71
जमदग्नि तीर्थ : तत्तापाणी/76
ममत्व दर्शन की सांस्कृतिक स्थली/80
महर्षि पराशर का पावन धाम/85

Scanned by Parul Arora Mandi

माण्डव्य ऋषि की तपोभूमि

व्यास और सुकेती नदी की जल-धाराओं के पुण्य संगम के आर-पार आबाद मण्डी नगर इस समय हिमाचल प्रदेश के मण्डी जिला का मुख्यालय है और स्वतन्त्रता के पहले यही स्थल मण्डी रियासत की राजधानी था। इस ऐतिहासिक नगर के नामकरण से सम्बन्धित

—माण्डव्य शिला

अनेकों किंवदन्तियां प्रचलित हैं। मण्डी नगर की स्थिति तो यह प्रमाणित करती है कि यह स्थान एक ओर यारकन्द, तिब्बत, लद्दाख और दूसरी ओर पंजाब के मैदानी भागों के लगभग केन्द्रीय स्थान पर पड़ता है जो कि पिछले समय में दोनों ओर के व्यापारियों के लिए

आदान-प्रदान के कारण यह स्थान "व्यापार केन्द्र" के बोधक शब्द "मण्डी" नाम से विख्यात हुआ।

परन्तु, एक अन्य किंवदन्ति के अनुसार मण्डी नगर का नामकरण "माण्डव्य" शब्द से जुड़ा है। माण्डव्य एक भार्गव गोत्रीय ऋषि हुए हैं। जिसका मत्स्य पुराण के गोत्र प्रवर निरूपण प्रसंग में भृगुवंश की परम्परा के अन्तर्गत भार्गव गोत्रीय मण्ड, माण्डूक, फेनप, स्तनित, स्थलपिण्ड, शिखावर्ण शार्करक्षि आदि ऋषियों के साथ किया गया है—

मण्डमाण्डव्यमाण्डूकफेनपाः स्तनितस्तथा।
स्थलपिण्डः शिखावर्णः शार्करक्षिस्तथैव च॥ (195/21)

महाभारत में माण्डव्य ऋषि का एक आख्यान आता है कि, पूर्वकाल में माण्डव्य नाम के एक ब्राह्मण थे, जो सब धर्मों के ज्ञाता सत्यनिष्ठ एव तपस्वी थे—

बभूव ब्राह्मणः कश्चिन्माण्डव्य विश्रुतः।
धृतिमान् सर्वधर्मज्ञः सत्ये तपसि च स्थितः॥ (106/2)

अर्थात् पूर्वकाल में माण्डव्य नाम से एक ब्राह्मण हुए जो धैर्यवान् एवं धर्मों के ज्ञाता सत्यनिष्ठ एवं तपस्वी थे। एक बार वे अपने आश्रम के पास दोनों बाहों को ऊपर उठाकर मौन साधना के साथ कठोर तपस्या कर रहे थे। कुछ लुटेरे जिनका पीछा राजपुरुषों द्वारा किया जा रहा था, इस ओर आए। लुटेरों को बचाव का उपाय न सूझा तो वे चोरी का माल आश्रम में छिपा कर आगे भाग निकले। राजपुरुष भी थोड़ी देर बाद वहीं पहुंचे तो उन्होंने ऋषि से पूछा कि जो चोर-लुटेरे यहां से आए थे, वह किस ओर को गए। माण्डव्य ऋषि उनसे कुछ न बोले और अपनी तपस्या में लीन रहे। राजपुरुषों को मुनि पर सन्देह हुआ। उन्होंने आश्रम में चोरी खोजने का प्रयास किया और वहीं चोरी का माल मिल गया। राजपुरुषों ने ऋषि को बांधा तथा उसे राजा के पास उपस्थित करवा कर सारा वृतान्त कह सुनाया। राजा ने प्राणदण्ड का आदेश दिया। उसी के अनुसार वे शूली पर चढ़ा दिए गए। महामुनि माण्डव्य बहुत दिनों तक शूली के अगले भाग में अविचल बैठे रहे। जब पहरेदारों ने इन्हें ज्यों की त्यों

Scanned by Parul Arora Mandi

स्थिति में देखा तो उन्होंने यह बात राजा को सूचित की। राजा शूली स्थल पर गया। वहां सारा ऋषि समाज पहुंचा हुआ था। ऋषियों ने राजा को माण्डव्य ऋषि की तप श्रेष्ठता के बारे में जतलाया।

राजा ने अज्ञानवश अपराध के लिए ऋषि से क्षमा मांगी और उन्हें शूली पर से उतरवा दिया। उतरते हुए शूली की नोक टूट कर उनके पांव में घुस गई। यह नोक जिसे संस्कृत में "अणि" कहते हैं, बहुत उपाय करने पर भी नहीं निकल सकी। तब से माण्डव्य ऋषि को "अणि माण्डव्य" के नाम से भी जाना जाता है। इस शूल (अणि) की पीड़ा इन्हें निरन्तर सताती रहती थी। एक बार धर्मराज से इन्होंने पूछा—"महाराज ! मुझे यह किस पाप का फल मिल रहा है ? धर्मराज ने बतलाया—"जब तुम बालक थे, उस समय एक फतिंगे के पिछले भाग में तुमने सींक घुसेड़ी थी। उसीका फल तुम्हें यह मिल रहा है।" माण्डव्य ऋषि ने कहा कि एक अनजान स्थिति में बालक द्वारा की गई भूल पर दिया गया यह दण्ड धर्म-शास्त्र विरुद्ध है। इस अन्याय के लिए तुम दासी पुत्र बनोगे। धर्मराज उसी शाप के फलीभूत विदुर के रूप में दासी के गर्भ से उत्पन्न हुए थे। माण्डव्य ऋषि ने तब एक धर्म-मर्यादा भी स्थापित की कि चौदह वर्ष की आयु तक अबोध स्थिति में की गई भूल पाप नहीं मानी जाएगी। उससे अधिक आयु में पाप करने वाला ही पाप का भागी होगा—

आ चतुर्दशकाद् वर्षान्न भविष्यति पातकम्।
परतः कुर्वतामेवं दोष एवं भविष्यति॥ (107/17)

महामुनि माण्डव्य किसी समय हिमालय भू-भाग के वर्तमान मण्डी नगर में आए। उन्होंने ने यहां एक महाशिला पर बैठ कर कठिन तपस्या की है। यह महाशिला इस समय राजकीय वल्लभ स्नातकोत्तर महाविद्यालय मण्डी के समीप में व्यास नदी की जलधारा के मध्य स्थित है। बाद में इसी शिला पर गुरू गोविन्द सिंह जी भी साधनालीन रहे हैं। बड़ी-बड़ी बाढ़ों के प्रकोप भी इस शिला को आज तक नहीं हिला सके हैं। यह माण्डव्य शिला "कोलसरा की चट्टान" के नाम से भी जानी जाती है। ऐसा अनुमान है कि पहले माण्डव्य शिला व्यास नदी के तट पर थी और उसके साथ ही एक सरोवर था जिसमें कमल खिलते थे। यह "कमल सरोवर" ही कालान्तर में ध्वनि परिवर्तन से "कोलसरा" नाम को प्राप्त हुआ है।

माण्डव्य ऋषि के नामकरण के सम्बन्ध में भी मण्डी में एक जनश्रुति प्रचलित है। कहते हैं कि त्रिलोकी नाथ शिव जब हिमाचल राजा के घर से पार्वती को विवाह कर कैलाश धाम ले जा रहे थे तो मण्डी पहुंचने पर वे सृष्टि संचालन के किसी आवश्यक कार्य से बारात को वहीं छोड़ कर स्वयं कैलाश जा पहुंचे। कई दिन बीत गए। शिव जी लौट के नहीं आए। पार्वती रोने लग पड़ी। उस समय एक तेजस्वी ऋषि शिव-मण्डप में आए और उन्होंने विधि-विधान से अनुष्ठान करके शिवजी का आह्वान किया। थोड़ी ही देर में शिवजी वहां उपस्थित हो गए। सारा वातावरण प्रसन्नता से झूम उठा। पार्वती ने महर्षि का नाम जानना चाहा। महर्षि ने कहा माता—"त्रिलोकीनाथ मुझे जिस नाम से पुकारें, वही मेरा नाम होगा।" शिवजी बोले—"तुम ने मेरे मण्डप में पुरोहित का सद्कर्म निभा कर पार्वती को चिन्ता मुक्त किया है। अतः तुम जगत में महर्षि मण्डप के नाम से जाने जाओगे।" यही नाम बाद में बदल कर माण्डव्य नाम से प्रसिद्ध हो गया। महर्षि माण्डव्य के इस लोकश्रेष्ठ कार्य की महानता के फलस्वरूप पहले सध्याणा नाम से जाना जाने वाले इस स्थान का नाम भी मण्डप से माण्डव्य और फिर बदलते-बदलते मण्डी हो गया। आज भी इस ऐतिहासिक नगर एवं सम्बन्धित जनपद को मण्डी कहते हैं।

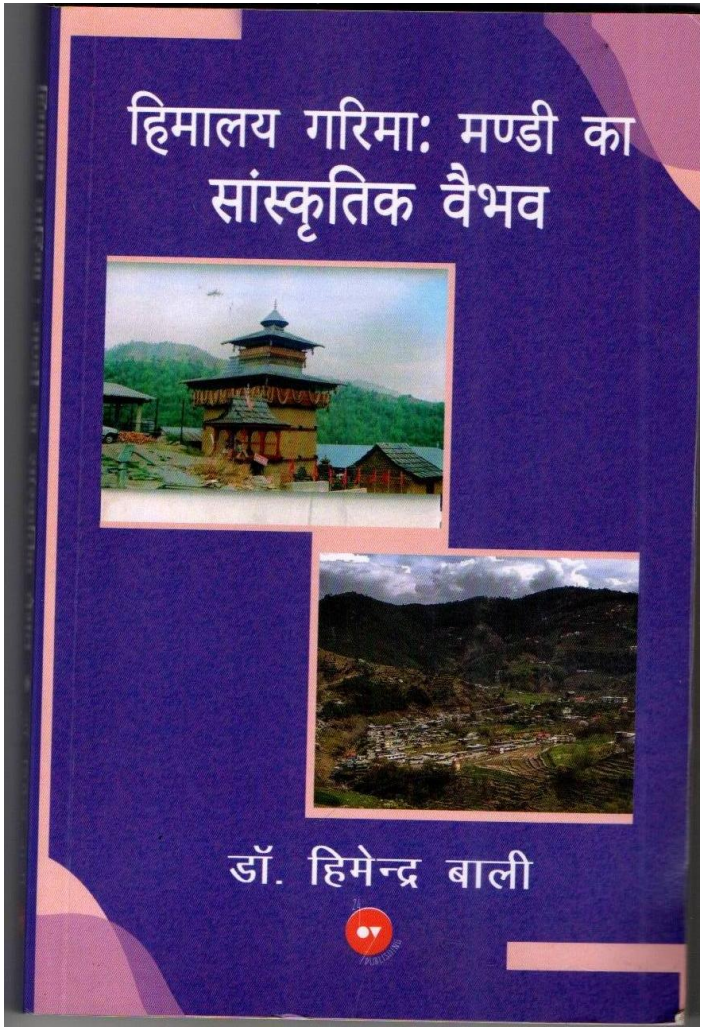

कृष्ण द्वैपायन ब्यास के पिता ऋषि पराशर का पावन धाम मण्डी के उत्तरसाल क्षेत्र में पराशर झील व मंदिर जगतप्रसिद्व है। पराशर ऋषि का कुल्लू जिले में कोठी महाराजा क्षेत्रान्तर्गत कमांद गाँव के पीछे संधार वन में कणोण नामक स्थान पर पवित्र आश्रम है। मण्डी में अवस्थित पराशर ऋषि के इस स्थान के विषय में मान्यता है कि ऋषि हिमालय पर्वत पर अध्यात्मिक चिन्तन के लिए किसी उपयुक्त स्थान की खोज में थे। जब वे भ्रमण करते यहाँ पहुँचे तो इस स्थान को तपश्चर्या के लिए अनुकूल पाया। यहीं भूमि पर गुर्ज मार कर भूमि से जल धारा निकाली जो झील का रूप धारण कर गई। यहीं झील के किनारे ऋषि तपस्यालीन हो गए।[11]

मण्डी क्षेत्र की प्राचीन पृष्ठभूमि इस तथ्य से भी सत्यभासित होती है कि यहाँ तत्तापानी में जमदग्नि, सुकेत में ब्यास पुत्र शुकदेव, रिवालसर में लोमश

Scanned by Parul Arora Mandi

ऋषि, मण्डी में माण्डव (माण्डव्य) ऋषि व करसोग में भृगु जैसे ऋषियों के भी आश्रम थे जो आज भी जनमानस की आस्था के केन्द्र हैं। इसी तरह पांगणा, पंडोह, शिकारी देवी, करसोग, पण्डार, माहूंनाग, कमरूनाग, धूमनी नाग, देव बड़ेवगी और देव दवाड़ी (करसोग) आदि स्थल लोकमान्यताओं में पाण्डवों एवं महाभारत के अन्यान्य योद्वाओं रत्न यक्ष (बर्बरीक) गुरू द्रोण, कर्ण, अर्जुन एवम् बकासुर से सम्बन्धित हैं। करसोग के देव थला वसिष्ठ ऋषि के दिव्यावतार माने जाते हैं। जबकि करसोग के ममलेश्वर महादेव के वजीर कजौणी नाग कश्यप ऋषि के रूप माने जाते हैं। संक्षेप में यह कहना समीचीन होगा कि सैन्धव सभ्यता से लेकर वैदिक काल तक मण्डी–सुकेत का क्षेत्र धर्म–अध्यात्म का मुख्य केन्द्र था।

सुकेत और मण्डी का नामकरण

सुकेत और मण्डी के नामकरण के पीछे कतिपय साहित्यिक आख्यान एवं स्थानवाचक मान्यताएं जुड़ी हैं। दोनों क्षेत्रों के नामकरण से भी यहाँ की पुरातनता और क्षेत्रीय महत्त्व की अभिव्यक्ति स्पष्ट होती है। ऐसी मान्यता व्याप्त

माण्डव्य ऋषि से मण्डी के नामकरण का अनुमोदन एक अन्य चिरविख्यात जनश्रुति करती है। वर्तमान मण्डी नगर के पूर्व में कोलसरा नामक स्थान पर जो मण्डी से एक मील दूर है, किसी समय माण्डव्य ऋषि का आश्रम था। ऋषि का आश्रम होने से नाम पड़ने की बात इस क्षेत्र में परम्परा से अनुमोदित है।[27] ब्यास नदी के मध्य में स्थित माण्डव्य शिला को कोलसरा की चट्टान के नाम से भी जाना जाता है। आज भी यह शिला समय के थपेडों व ब्यास नदी की तीव्र धारा को सहन करते हुए यथावत् अडिग खड़ी है। इसी शिला पर सिक्खों के दसवें गुरू गोविन्द सिंह ने भी अठारहवीं शताब्दी के आरम्भ में यहाँ आकर तपस्या की थी। ऐसा अनुमान है कि पूर्व में माण्डव्य–शिला ब्यास नदी के तट पर थी। समीपस्थ ही एक सरोवर था, जिसमें कमल खिलते थे। यही कमल सरोबर कालान्तर में ध्वनि परिवर्तन के कारण कोलसरा नाम को प्राप्त हुआ।[28]

मण्डी के नामकरण के विषय में वासुदेवशरण अग्रवाल ने भी पाणिनी की अष्टाध्यायी के आधार पर मण्डवती शब्द का उल्लेख स्थान वाचक अर्थ में किया है। मण्डवती का शाब्दिक अर्थ सजाना और वितरित करना है।[29] इसके अतिरिक्त मण्डमती शब्द भी मण्डी की व्युत्पति में सहायक माना जाता है, जिसका अर्थ कर उगाई का स्थान माना जाता है।[30] उपरोक्त मण्डी के नामकरण से सम्बन्धित शब्द रूप और मान्यताओं से मण्डी की प्राचीनतम् ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का पता चलता है।

उत्तर भारत में पाण्डवों की कैलाश यात्रा तथा अर्जुन की दिग्विजय का वर्णन प्राचीन काल से प्राप्त होता है और हिमालय के इस खण्ड में यही लोकवार्ता विख्यात है।[31] वास्तव में हिमाचल का प्रत्येक भाग पाण्डवों से सम्बन्धित पुराकथाओं, जनश्रुतियों और पुरातात्विक स्थानों से भरा पड़ा है।[32] पाण्डव तीन बार हिमालय में वनवास और भ्रमण के लिए आए थे। मण्डी और सुकेत में प्रचलित लोक वार्ताओं में पाण्डवों के लाक्षा गृह के पश्चात् भेष बदल कर विचरण और वनवास सम्बन्धी अनगिनत आख्यान प्रचलित हैं। मण्डी के बाली–चौकी में कोटलू देवता के नाम से भीम व हिडिम्बा पुत्र घटोत्कच का मंदिर है। गोहर में भी छांजनू देवता के रूप में घटोत्कच पूजित हैं। मण्डी के गुम्मा और सराज के बगसयाड़ में हिडिम्बा के मंदिरों की विधमानता से यहाँ की प्राचीन परम्पराओं का पता चलता है।[33] लोक परम्पराओं से पता चलता है कि सुकेत में सतलुज नदी के तट पर तत्तापानी में जमदग्नि ऋषि ने आर्य संस्कृति का प्रसार करते हुए यहाँ अपना आश्रम स्थापित किया। उनके पुत्र परशुराम ने सतलुज घाटी में अवस्थित करसोग के काव व ममेल में आर्य उपनिवेशों की स्थापना की।[34] हालांकि जोधपुर में जो मण्डोर नगर है वहां भी माण्डव्य नगर है जिसका उल्लेख जोधपुर के एक शिलालेख से मिलता है। परन्तु माण्डव्य ऋषि का मण्डी के शान्त क्षेत्र में तपश्चर्या के लिए स्थान चुनना भी संगत प्रतीत होता है। मण्डी का माण्डव्य ऋषि के नाम से वर्तमान स्थान नामकरण पाना सत्य के समीप लगता है।[35]

उपरोक्त सभी लोक मान्यताओं, साहित्यिक व पुरातात्विक स्त्रोतों के

Scanned by Parul Arora Mandi

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक

श्री गुरु जी

के मण्डी शुभागमन पर

समर्पित मानपत्र

मान्यवर !

हिमालय की इस मनोरम घाटी, महर्षि माण्डव की तपोभूमि, मण्डी नगर में आपके शुभागमन पर हम आपका हार्दिक स्वागत करते हैं। यद्यपि मण्डी नगर-वासियों के लिये आपके विचार सुनने का यह प्रथम अवसर नहीं तो भी आपका सार्वजनिक स्वागत करने का यह प्रथम सौभाग्य है।

नव दधीचि !

आज जब कि भौतिकवादी सभ्यता के प्रबल झकोरों से इस देश की परम-पावन सांस्कृतिक धरोहर को उखाड़ फैंकने का कुप्रयास चल रहा है, जब स्वार्थ की अग्नि में देश व धर्म के हित को पीछे फैंका जा रहा है ऐसी स्वार्थपूर्ण पश्चिमी सभ्यता के चमकीले युग में भी आप अपने जीवन की खिलती जवानी के यौवन पुष्प को भारत-माता के चरणों में अर्पित करके सारे देश के लिये एक महान प्रेरणा स्तम्भ बन गये हैं। अपना घर गृहस्थ बनाने की कभी बात तक भी न सोचकर इस देश की राष्ट्रीय परम्परा को फिर से जाग्रत कर एक संगठित शक्तिशाली राष्ट्र बनाने की साध दिल में लिये भारत के नगर-नगर, ग्राम-ग्राम में जन-जन के मन में प्रखर राष्ट्रभक्ति जगाने का लगातार कार्य करके आपने महर्षि दधीचि के आदर्श को पुनर्जीवित कर दिया है।

युगपुरुष !

दलों व पार्टियों के घेरे से ऊपर उठकर भारत माता के समान पुत्र होने के नाते देश-सेवा करने का आपने अमर संदेश दिया है। जिस प्रकार विभिन्न रास्तों से कलकल निनाद करती विभिन्न नदियां एक ही समुद्र में जाकर विलीन हो जाती हैं उसी प्रकार विभिन्न दल व पार्टियां एक ही भारत माता की सेवा का भाव लेकर अग्रसर हों—यह आह्वान करके आपने सामाजिक जीवन में एक नयी परम्परा स्थापित की है।

राजनीति की वाह वाह, फूल मालाओं व सत्ता के लोभ लालच से अलग रहकर राष्ट्र जीवन को मार्ग-दर्शन देने वाले व्यास, वशिष्ट, चाणक्य व गान्धी जी की परम्परा के आप आधुनिक ऋषि हैं।

युग-कर्णधार !

हजारों लाखों शहीदों की कुर्बानियों से प्राप्त की हुई स्वतन्त्रता का बीस वर्ष का नन्हा सा पौदा संकटों के भयंकर बादलों की गड़गड़ाहट से कम्पायमान है। शिव का शिवालय, यह हिमालय मां का मुकुट उत्तरी सीमान्त चीन के कदमों की आहट से त्रस्त है, पूर्वी व पश्चिमी सीमा पर पड़ौसी पाकिस्तान शत्रु भाव से खड़ा है, देश में पंच-मांगी (गद्दार) तत्व सिर उठा रहे हैं, प्रान्तवाद और भाषावाद के कीटाणु जन-जीवन को अन्दर से खोखला बना रहे हैं, पर ऐसी निराशा के काले बादलों में आप सरीखे महापुरुषों का कार्य आशा की स्वर्णिम किरण बन प्रज्ज्वलित हो उठता है।

इस देश में, इस देश की उज्ज्वल परम्परा की पावन नींव पर एक वैभवशाली राष्ट्र बनाने का आपका आदर्श हम सब के लिये अनुकरणीय है।

देश-भक्त व महापुरुष किसी एक संगठन के माध्यम से देश का कार्य करते हैं पर वे किसी एक संस्था या संगठन के नहीं होते। वे तो सारे देश के, सारे देश के लिये होते हैं। इसी भाव से प्रेरित हो एकात्मता का अनुभव कर हम श्रद्धा के ये कुछ शब्द-पुष्प लेकर आपके सन्मुख उपस्थित हुए हैं।

मण्डी नगर-वासियों की ओर से एक बार फिर आपका हार्दिक अभिनन्दन करते हुए हम आशा करेंगे कि इन शब्दों को स्वीकार कर आप हमें आशीर्वाद दें।

हम हैं आपके

सदस्यगण नगर पालिका मण्डी (हि० प्र०)

अरुण प्रिंटिंग प्रेस, मण्डी (हि० प्र०)

1968

SCANNED BY Parul Arora Mandi H.P.

to make the legend of settlement more attractive after giving it a religious flavour. Suket is supposed to be a derivation from Shuk-shetra i.e. the land of Shukdev Muni, son of Ved Vyas, the author of Mahabharata. Similarly Mandi is associated with another sage known as Mandhavaya Rishi. It is said that he took rigorous panacea at the Kolsara boulder on the left bank of the river Beas near the present Sikh Gurudwara. This attached glory still found mention when Kolsar boulder on the left bank of the river Beas was called Mandavya Nagar. The scholarly tribe may raise their eyebrows on such explanation but while reviewing or rewriting the historical accounts, such events cannot be brushed aside casually especially in western Himalayan hills where the past has remained preserved and the crisscross and upheaval of the plains was not so vigorous as witnessed elsewhere. Mandavya Rishi is not, on the whole, that important as Parashar, Vyas, Markandeye, Vashistha and Shukhdev, all of whom are supposed to have their abodes in Himachal. According to the "Sant Ank" (Aug. 1937) of the Hindi monthly *Kalyan* of Gorakhpur (U.P.) some king in old hoary past, ordered one sage to crucification. On getting the antecedent of the sage the raja repented and restored him back to his place of honour but the fine needle part of the "suli" remained embedded in his body and therefore he was called Ani-mandevaya. Another legend states that he passed a curse to Yama and he incarnated as Vidur in Mahabharat and underwent all the mental tortures and tension regarding the welfare of his clan. No further information regarding Mandavaya is said to be available in any Sanskrit texts.

More plausible explanation to call Mandi as Mandi in Hindi is synonym for market place. Not only all roads lead to the capital town since its infancy being located in the centre of the state but it was on the ancient trade route from Punjab plains to Lahol and via Baralacha to Ladakh and further to Yarkand and Tashkand. Vogel and Huchinson think that it is a decadent form of the Sanskrit word "mandapika" meaning thereby that it is a small flat saucer shaped place. In Sanskrit grammar book of immense historical value *Astha-dayayi* there is a word Mandawati used for hill country and may probably be a substitute for the then country presently known as Mandi. While commenting in his book *India as known to Panini* Dr. Vashudev Sharan Agarwal has concluded that the word Suket and Mandawati as mentioned in the Sabha-Parva of Mahabharat are for Suket and Mandi. While on his victorious march, the hero of the epic, Arjuna had subjugated these territories

HISTORY AND HERITAGE OF THE WESTERN HIMALAYAS DR. B.L. KAPOOR

RELATED INFORMATION IN GAZETTERs ALSO (Mandi State) and contact with other writers and local people